मधुबन ओम् शान्ति अंक 396 जुलाई 2025

पत्र-पुष्प

"वर्तमान समय श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति जमा कर तीव्रगति की सेवा के निमित्त बनो"

(बापदादा और बड़ी दीदियों की शुभ प्रेरणायें - याद पत्र 22-6-2025)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, बीजरूप बाप की याद से संकल्प रूपी बीज में सर्वशक्तियों का बल भरने वाले, हर श्रेष्ठ संकल्प को फलीभूत बनाने वाले, ऐसे शुभ और श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति से सम्पन्न निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आप सभी वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ मन्सा संकल्प की शक्तियों द्वारा सेवा कर रहे होंगे! प्यारे बापदादा का विशेष इशारा है बच्चे, अब अपने संकल्पों को आर्डर प्रमाण चलाओ। संकल्प शक्ति जमा करने के लिए जो सोचो वही करो, स्टॉप कहो तो स्टॉप हो जाए, सेवा का सोचो तो सेवा में लग जाए। परमधाम का सोचो तो परमधाम में पहुंच जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर अभी बढ़ाओ। इसके लिए बाबा कहते बच्चे, समाने वा समेटने की शक्ति धारण करो। अभी तक जैसे वाचा द्वारा डायरेक्शन देना पड़ता है, ऐसे अब श्रेष्ठ संकल्प से सारी कारोबार चलाकर देखो। जैसे साइंस वाले नीचे पृथ्वी से ऊपर तक डायरेक्शन भेजते रहते हैं, ऐसे आप बच्चे क्या अपने श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति से यज्ञ की कारोबार नहीं चला सकते हो? इसके लिए सिर्फ श्रेष्ठ संकल्पों का स्टॉक जमा चाहिए। वर्तमान समय के पुरुषार्थ में हर संकल्प पावरफुल हो क्योंकि यही जीवन का श्रेष्ठ खजाना है। श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता ही विश्व कल्याण करने का सहज साधन है।

वर्तमान समय विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि मेरी भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। तो आप बच्चों का फर्ज है अपनी एकाग्र और एकरस स्थिति द्वारा अन्य आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों व विकल्पों की बहती हुई बाढ़ को रोकना। अपने शुद्ध संकल्पों से किसी के भी व्यर्थ संकल्पों को परिवर्तित कर देना, लेकिन इसके लिए आप बच्चे अपने संकल्पों को ऐसा स्वच्छ बनाओ जिसमें जरा भी व्यर्थ की अस्वच्छता न हो। एक बाप दूसरा न कोई, इसी लगन में मगन रहो।

तो बोलो, मीठे भाई बहिनें अब अपने एक एक संकल्प पर इतना अटेन्शन रहता है ना! कोई भी दृश्य देखते, सुनते, उसके विस्तार में जाने के बजाए सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास करो। अब समय है हर दृश्य को साक्षीदृष्टा बन देखना और अपनी शुभ भावनाओं की सकाश देना।

जून मास में तो आप सभी ने मीठी मम्मा के समान उनके गुणों और शक्तियों को ध्यान पर रखते हुए विशेष पुरुषार्थ किया होगा। अभी जुलाई मास के लिए 5 सप्ताह का होमवर्क भेज रहे हैं। हर सप्ताह विशेष कर्म में एक गुण तथा उस गुण को शक्ति स्वरूप में परिवर्तित करने के लिए योग अभ्यास करना है। यह जुलाई मास हम सबकी अति स्नेही महा तपस्वी मीठी दीदी मनमोहिनी जी की स्मृतियों का विशेष मास है। तो दीदी जी के समान एकव्रता बन हर एक को योग की गहरी अनुभूतियां करनी है।

बाकी बाबा के बेहद घर में योग तपस्या के साथ, अनेक प्रकार की बेहद सेवायें भी चलती रहती हैं। आप सभी का स्नेह और सहयोग सदा ही मिलता रहता है। अब तो विशेष अटेन्शन रख हर एक को अपना मनोबल बढ़ाना है और सुबह शाम प्रतिदिन प्रकृति सहित सर्व आत्माओं को मन्सा सकाश देने की सेवा जरूर करनी है। अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति।

ये अव्यक्त इशारे

संकल्पों की शक्ति जमा कर श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बनो

1) जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमाकर कई कार्य सफल करते हैं। यह भी संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई हो तो उससे औरों में भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। जो हिम्मतहीन हैं उन्हें हिम्मत देनी है। वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज्यादा कार्य करेगी, वर्तमान समय इसी की आवश्यकता है।

2) मन जो स्वयं एक सूक्ष्म शक्ति है, वह कन्ट्रोल में हो अर्थात् आर्डर प्रमाण कार्य करे तो पास विद आनर अथवा राज्य अधिकारी बन जायेंगे। संकल्प शक्ति को जमा करने के लिए जो सोचो वहीं करो, स्टॉप कहो तो स्टॉप हो जाए, सेवा का सोचो तो सेवा में लग जाए। परमधाम का सोचो तो परमधाम में पहुंच जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर अभी बढ़ाओ।

3) जब और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, बस एक बाप और आप - इस मिलन की अनुभूति का संकल्प रहता है तब संकल्प शक्ति जमा होती है और योग पावरफुल हो जाता है। इसके लिए समाने वा समेटने की शक्ति धारण करो। संकल्पों पर फुल ब्रेक लगे, ढीली नहीं। अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर है।

4) किसी भी श्रेष्ठ संकल्प रूपी बीज को फलीभूत बनाने का सहज साधन एक ही है, वह है सदा बीज रूप बाप से हर समय सर्व शक्तियों का बल उस बीज में भरते रहना। बीज रूप द्वारा आपके संकल्प रूपी बीज सहज और स्वत: वृद्धि को पाते फलीभूत हो जायेंगे। संकल्प शक्ति जमा हो जायेगी।

5) सबसे तीव्रगति की सेवा का साधन है - शुभ और श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति। जैसे ब्रह्मा बाप श्रेष्ठ संकल्प की विधि द्वारा सेवा की वृद्धि में सदा सहयोगी हैं। विधि तीव्र है तो वृद्धि भी तीव्र है। ऐसे आप बच्चे भी श्रेष्ठ शुभ संकल्पों में सम्पन्न बनो।

6) श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है - ''श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म।'' चाहे ट्रस्टी आत्मा हो, चाहे सेवाधारी आत्मा हो, दोनों इसी आधार द्वारा नम्बर ले सकते हैं। दोनों को भाग्य बनाने का पूरा चांस है, जो जितना भाग्य बनाना चाहे बना सकते हैं।

7) स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों से सम्पन्न बनाने के लिए ट्रस्टी बनकर रहो, ट्रस्टी बनना अर्थात् डबल लाइट फरिश्ता बनना। ऐसे बच्चों का हर श्रेष्ठ संकल्प सफल होता है। एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है।

8) जितना-जितना आप बच्चे श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से सम्पन्न बनते जायेंगे उतना श्रेष्ठ संकल्प की शक्तिशाली सेवा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। हर एक अनुभव करेंगे कि हमें कोई बुला रहा है, कोई दिव्य बुद्धि द्वारा, शुभ संकल्प का बुलावा हो रहा है। कोई फिर दिव्य दृष्टि द्वारा बाप और स्थान को देखेंगे। दोनों प्रकार के अनुभवों द्वारा बहुत तीव्रगति से अपने श्रेष्ठ ठिकाने पर पहुँच जायेंगे।

9) हर एक बच्चा जो स्व प्रति वा सेवा के प्रति उमंगों के अच्छे-अच्छे संकल्प करता है कि अभी से यह करेंगे, ऐसे करेंगे, अवश्य करेंगे, करके ही दिखायेंगे... ऐसे श्रेष्ठ संकल्प के बीज जो बोते हो, उस संकल्प को अर्थात् बीज को प्रैक्टिकल में लाने की पालना करते रहो तो वह बीज फल स्वरूप बन जायेगा।

10) सभी आत्मायें एक ही बेहद का परिवार हैं, अपने परिवार की कोई भी आत्मा वरदान से वंचित न रह जाए – ऐसे उमंग-उत्साह का श्रेष्ठ संकल्प दिल में सदा रहे। अपनी प्रवृत्तियों में ही बिजी नहीं रहना, बेहद की स्टेज पर स्थित हो, बेहद की आत्माओं की सेवा का श्रेष्ठ संकल्प करो, यही सफलता का सहज साधन है।

11) जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं। ऐसे आपका श्रेष्ठ संकल्प इन्जेक्शन का काम करेगा। संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाए - अभी इस सेवा की बहुत आवश्यकता है। स्वयं की सेफ्टी के लिए भी शुभ और श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बन सकेंगे।

12) जैसे ब्रह्मा बाप ने विशेष श्रेष्ठ संकल्प से बच्चों का आह्वान किया अर्थात् रचना रची। यह संकल्प की रचना भी कम नहीं है। श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प ने प्रेर कर भिन्न-भिन्न धर्मों के पर्दो से निकालकर समीप लाया। ऐसे आप बच्चे भी शक्तिशाली श्रेष्ठ संकल्पधारी बनो। अपने संकल्पों की शक्ति को ज्यादा खर्च नहीं करो, व्यर्थ नहीं गंवाओ। तो श्रेष्ठ संकल्प से प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी।

13) अभी जैसे वाचा से डायरेक्शन देना पड़ता है, ऐसे श्रेष्ठ संकल्प से सारी कारोबार चल सकती है। साइंस वाले नीचे पृथ्वी से ऊपर तक डायरेक्शन लेते रहते हैं, तो क्या आप श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से सारी कारोबार नहीं चला सकते हो! जैसे बोल करके बात को स्पष्ट करते हैं, वैसे आगे चल कर संकल्प से सारी कारोबार चलेगी, इसके लिए श्रेष्ठ संकल्पों का स्टॉक जमा करो।

14) अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अन्य आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों व विकल्पों की बहती हुई बाढ़ से और अपनी शक्ति से अल्प समय में किनारा करके दिखाओ। व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्पों में परिवर्तित कर दो। एक स्थान पर होते हुए भी अनेक आत्माओं पर आपके श्रेष्ठ संकल्प और दिव्य नज़र का प्रभाव पड़े।

15) वर्तमान समय के पुरुषार्थ में हर संकल्प को पॉवरफुल बनाना है। संकल्प ही जीवन का श्रेष्ठ खजाना है। जैसे खजाने द्वारा जो चाहे, जितना चाहे, उतना प्राप्त कर सकते हैं, वैसे ही श्रेष्ठ संकल्प द्वारा सदाकाल की श्रेष्ठ प्रालब्ध पा सकते हो। इसके लिए एक छोटा-सा स्लोगन स्मृति में रखो कि सोच समझकर करना और बोलना है तब सदाकाल के लिए श्रेष्ठ जीवन बना सकेंगे।

16) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्प की एकाग्रता है, इससे ही सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र कर सकेंगे। विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। इसके लिए एकाग्रता अर्थात् सदा एक बाप दूसरा न कोई, इस स्मृति से एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास करो।

17) जो कार्य आज के अनेक पदमपति नहीं कर सकते हैं वह आपका एक संकल्प आत्मा को पदमापदमपति बना सकता है इसलिए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति जमा करो और कराओ। श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति को ऐसा स्वच्छ बनाओ जो जरा भी व्यर्थ की अस्वच्छता भी न हो तब यह शक्ति कमाल के कार्य करेगी।

18) समय प्रमाण शीतलता की शक्ति द्वारा हर परिस्थिति में अपने संकल्पों की गति को, बोल को शीतल और धैर्यवत बनाओ। यदि संकल्प की स्पीड फास्ट होगी तो बहुत समय व्यर्थ जायेगा, कन्ट्रोल नहीं कर सकेंगे इसलिए शीतलता की शक्ति धारण कर लो तो व्यर्थ से वा एक्सीडेंट से बच जायेंगे। यह क्यों, क्या, ऐसा नहीं वैसा, इस व्यर्थ की फास्ट गति से छूट जायेंगे।

19) कोई-कोई बच्चे कभी-कभी बड़ा खेल दिखाते हैं। व्यर्थ संकल्प इतना फोर्स से आते जो कन्ट्रोल नहीं कर पाते। फिर उस समय कहते क्या करें हो गया ना! रोक नहीं सकते, जो आया वह कर लिया लेकिन व्यर्थ के लिए कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए। जैसे एक समर्थ संकल्प का फल पदमगुणा मिलता है। ऐसे ही एक व्यर्थ संकल्प का हिसाब-किताब - उदास होना, दिलशिकस्त होना वा खुशी गायब होना - यह भी एक का बहुत गुणा के हिसाब से अनुभव होता है।

20) आपकी जो सूक्ष्म शक्तियां मंत्री वा महामंत्री हैं, (मन और बुद्धि) उन्हें अपने आर्डर प्रमाण चलाओ। यदि अभी से राज्य दरबार ठीक होगा तो धर्मराज की दरबार में नहीं जायेगे। धर्मराज भी स्वागत करेगा। लेकिन यदि कन्ट्रोलिंग पावर नहीं होगी तो फाइनल रिज़ल्ट में फाइन भरने के लिए धर्मराज पुरी में जाना पड़ेगा। यह सजायें फाइन हैं। रिफाइन बन जाओ तो फाइन नहीं भरना पड़ेगा।

21) वर्तमान, भविष्य का दर्पण है। वर्तमान की स्टेज अर्थात् दर्पण द्वारा अपना भविष्य स्पष्ट देख सकते हो। भविष्य राज्य-अधिकारी बनने के लिए चेक करो कि वर्तमान मेरे में रूलिंग पावर कहाँ तक है? पहले सूक्ष्म शक्तियाँ, जो विशेष कार्यकर्ता हैं - संकल्प शक्ति के ऊपर, बुद्धि के ऊपर पूरा अधिकार हो। तब अपना भविष्य उज्वल बना सकेंगे।

22) जैसे राजा स्वयं कोई कार्य नहीं करता, कराता है। करने वाले राज्य कारोबारी अलग होते हैं। अगर राज्य कारोबारी ठीक नहीं होते तो राज्य डगमग हो जाता है। ऐसे आत्मा भी करावनहार है, करनहार ये विशेष त्रिमूर्ति शक्तियाँ हैं। पहले इनके ऊपर रूलिंग पावर हो तो यह साकार कर्मेन्द्रियाँ उनके आधार पर स्वत: ही सही रास्ते पर चलेंगी।

23) जैसे सतयुगी सृष्टि के लिए कहते हैं एक राज्य एक धर्म है। ऐसे ही अब स्वराज्य में भी एक राज्य अर्थात् स्व के इशारे पर सर्व चलने वाले हों। मन अपनी मनमत पर न चलावे, बुद्धि अपनी निर्णय शक्ति की हलचल न करे। संस्कार आत्मा को नाच नचाने वाले न हो तब कहेंगे एक धर्म, एक राज्य। तो ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर धारण कर लो, यही बेहद सेवा का साधन है।

24) लास्ट में फाइनल पेपर का क्वेश्चन होगा - सेकण्ड में फुल स्टॉप, इसी में ही नम्बर मिलेंगे। सेकेण्ड से ज्यादा हो गया तो फेल हो जायेंगे। एक बाप और मैं, तीसरी कोई बात न आये। ऐसे नहीं यह कर लूं, यह देख लूं... यह हुआ, नहीं हुआ। यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ - ऐसा कोई भी संकल्प आया तो फाइनल पेपर में पास नहीं होंगे।

25) संकल्प शक्ति जमा करनी है तो कोई भी बात देखते, सुनते सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास करो। अगर संकल्पों में क्यों, क्या की क्यू लगा दी, व्यर्थ की रचना रच ली तो उसकी पालना करनी पड़ेगी। संकल्प, समय, एनर्जी उसमें खर्च होती रहेगी इसलिए इस व्यर्थ रचना का बर्थ कन्ट्रोल करो तब बेहद सेवा के निमित्त बन सकेंगे।

26) जो अपनी सूक्ष्म शक्तियों (मन-बुद्धि) को हैंडिल कर सकता है, वह दूसरों को भी हैंडिल कर सकता है इसलिए स्व के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर हो तो यही यथार्थ हैंडलिंग पावर बन जाती है। चाहे अज्ञानी आत्माओं को सेवा द्वारा हैंडिल करो, चाहे ब्राह्मण-परिवार में स्नेह सम्पन्न, सन्तुष्टता सम्पन्न व्यवहार करो – दोनों में सफल हो जायेंगे।

27) तीन शब्दों के कारण कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर कम हो जाती है। वह तीन शब्द हैं – 1. व्हाई (Why क्यों), 2.(What क्या), 3.(Want चाहिए)। यह तीन शब्द खत्म कर सिर्फ एक शब्द बोलो। ''वाह'' तो कन्ट्रोलिंग पावर आ जायेगी, फिर संकल्प शक्ति द्वारा बेहद सेवा के निमित्त बन सकेंगे।

28) अन्त समय में अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति ही साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर चाहिए। बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो।

29) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो तो संकल्प शक्ति जमा होती जायेगी। अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं, सेवा होती है।

30) निमित्त बने हुए बच्चों को विशेष अपने हर संकल्प के ऊपर अटेन्शन देना चाहिए, जब आप निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प रहेंगे तब बुद्धि ठीक निर्णय करेगी, निर्णय ठीक है तो निवारण भी सहज कर लेंगे। निवारण करने के बजाए अगर आप ही कारण, कारण कहेंगे तो आपके पीछे वाले भी हर बात में कारण बताते रहेंगे।

31) सेवा में मुख द्वारा सन्देश देने में समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो.. लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा। तो इस संकल्प शक्ति को बढ़ाओ। दृढ़ता सम्पन्न संकल्प करो तो प्रत्यक्षता भी जल्दी होगी।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

दादियों की आपस में गुह्य रूहरिहान

"फरिश्ते स्वरूप द्वारा मन्सा सेवा कर सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो" (27-08-10)

गुल्जार दादी: अभी हम सभी शान्ति स्वरूप के अनुभव में खोये हुए थे। यही शान्ति हमें दुनिया में फैलानी है। चाहे देश है, चाहे विदेश है लेकिन सब आत्मायें परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं। तो बाबा जानते हैं कि मेरे बच्चे इतने दु:खी और अशान्त हो गये हैं इसलिए हम बच्चों को बाबा ने निमित्त बनाया है, बच्चे शान्तिदूत बनके विश्व में शान्ति फैलाओ। तो यह समय मन्सा सेवा द्वारा दुनिया की दु:खी आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली देने का है। जैसे गुलाबासी डालते हैं तो सब फ्रेश हो जाते हैं, ऐसे बाबा कहते बच्चे, विश्व की आत्माओं पर सुख-शान्ति की गुलाबासी डालो। यह अभ्यास का समय अगर निकाल सको तो बहुत अच्छा है। अमृतवेला और शाम सात बजे का योग अगर हम विश्व सेवा के निमित्त करें तो हम अनेक आत्माओं को मदद कर सकते हैं।

रतनमोहिनी दादी: नुमाशाम के संगठन में हम सब एक की ही याद में बैठे थे। यह एक बाप की याद, शान्ति के सागर, प्रेम के सागर, सर्व के कल्याणकारी बाप की याद हम सर्व के अन्दर बनी रहे, ऐसे सर्वशक्तिमान बाप की याद का संगठन से शान्ति के वायब्रेशन फैलते रहेंगे। नुमाशाम के योग के लिए कहा जाता है कि इस समय देवतायें भी परिक्रमा भी निकलते हैं। हमें बाबा ने विशेष रूप से यही इशारा दिया है कि अब समय को देखते, एवररेडी और सम्पूर्ण बनना ही है। हम अभी सम्पूर्णता का स्वयं में आह्वान करें। सदा साक्षी होकर हर सीन को देखते हुए फरिश्तेपन की स्टेज में स्थित रहें। इसके साथ चलते-फिरते यह अटेन्शन बना रहे कि अब तो हमें फरिश्ता बनके उड़ते रहना है। ऐसे अपने वायब्रेशन विश्व के अन्दर फैलाते हुए विश्व में फिर से सुख शान्ति और चैन की दुनिया बनानी है। ऐसे शुभ विचारों से स्वयं को सम्पन्नता की ओर बढ़ाते जायें। हम बाबा की आशाओं को पूर्ण करते हुए स्व की स्थिति में स्थित रहते हुए आगे बढ़ते चलें।

दादी जानकी: एक ओम् शान्ति में शान्त हो जाओ, दूसरी ओम् शान्ति में बाबा से शक्ति ले लो, फिर तीसरी ओम् शान्ति में ड्रामा बड़ा अच्छा मीठा है। तो बाबा मीठा या ड्रामा मीठा?

यह समय है ही बाबा के साथ रहने का। इस संगठन को देख कई आत्माओं को खींच होगी, मैं भी आ जाऊं। बाबा हमारे सामने प्रत्यक्ष हुआ है। ब्रह्मा बाबा में हमने शिवबाबा को देखा। देवताओं को कोई मानते हैं, कोई नहीं मानते हैं, लेकिन फरिश्तों को सभी मानते हैं। तो हम कौन हैं? ब्राह्मण सो देवता तो नम्बरवार होंगे, लेकिन फरिश्ते बनेंगे तो नम्बरवन बनेंगे।

मन से पूछो मैं क्या सेवा करता हूँ? कहाँ चटकता, लटकता तो नहीं हूँ! कोई कर्मेन्द्रियों के वश तो नहीं होता हूँ। पहले मन की सेवा करो, मन को सीधा बनाके रखो। अटकता वही है जो वेस्ट काम करता है, वेस्ट सोचता है। थकने से आवाज वा शक्ल चेन्ज हो जायेगा। अभी मेरा बाबा, मीठा बाबा मेरे साथ है, साक्षी होकर ड्रामा की हर सीन देखना है। हीरो बनना है तो जीरो लगाओ। जीरो, बाप को साथी बनाओ। आत्मा बिन्दी है, परमात्मा बिन्दी है, यह बुद्धि समझने लायक अभी बनी है। बस हमारे जैसा राजाओं का राजा कोई नहीं है।

ईश्वरीय स्नेह की सकाश सोते समय भी याद रहती है। अष्ट रत्न आपस में कैसे होंगे? बाबा के नयनों के नूर होंगे, वह सिर्फ स्वदर्शन चक्रधारी नहीं होंगे। स्वदर्शन चक्रधारी समझेंगे तो वैजयन्ती माला में आयेंगे। 16000 भी अच्छे हैं, पर वैजयन्ती माला में आने वाले कितना निश्चय बाप में, स्वयं में, ड्रामा में। आत्मा में विश्वास, बाबा में विश्वास, ड्रामा की हर सीन में विश्वास, विजय हुई पड़ी है, इसमें निश्चय है तो वैजयन्ती माला में आयेंगे।

होगी या नहीं, यह ख्याल आ नहीं सकता।

शुभचिन्तन और शुभचिन्तक, इन दो शब्दों को याद रखो। बाबा बैठा है, मुझे सिर्फ शुभ संकल्प करना है। करेगा बाबा, पर हमारे संकल्प में दृढ़ता रहे। कोई भी क्यूं, क्या, कैसे नहीं कह सकता। हमें टिकलू, टिक्लू करना है। बाबा की अंगुली पर नाचना है, किसको अगुंली नहीं दिखानी है। जहाँ युनिटी है, वहाँ राजाई है, जहाँ ओके है वहाँ भाग्य बनाने की सेवा हो रही है। भाग्य विधाता ब्रह्मा बाबा, वरदाता शिवबाबा सदा साथ हैं। शिवबाबा के साथ रहने वाले शालिग्राम के रूप में पूजे जाते हैं। अभी यह अन्तिम जन्म है, देह के सम्बन्ध पुराने अनेक जन्मों के हिसाब के कारण है। यह बात जिस घड़ी ठका हुई तो कोई भी बात खींच नहीं सकती। जो भगवान करायेगा वही करेंगी। अन्तिम जन्म है, संगमयुग है, इसमें हमको क्या करना है, अन्त घड़ी कैसी हो - बहुत काल से अगर ऐसी स्थिति होगी तो अन्त समय बाबा हमारे सामने होगा, हम बाबा के सामने हाज़िर हो जायेंगे।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"अशरीरी बन अशरीरी बाप से कनेक्शन जोड़ो तो लाइट माइट मिलेगी, विकर्म विनाश होंगे" (02-10-06)

महफिल में जल उठी शमा। हम फेरी लगाने वाले परवाने नहीं, मर मिटने वाले, फिदा होने वाले हैं। फिदा होने के लिए सिर्फ मोहब्बत चाहिए, सच्चा प्यार चाहिए। बुद्धि और कहाँ भी चक्कर नहीं लगाये। शमा को देखा माना सर्वशक्तिमान बाप को देखा।

हम बाबा के बच्चों के अन्दर में गीता का ज्ञान और चलन में बाबा के चरित्र। बहुत खुशी है, पता नहीं क्यों कोई उदास होते हैं। बदकिस्मत वाले दु:खी होते हैं, अरे मेरे मीठे बाबा, गीता ज्ञानदाता के दो शब्द सुन लो, बस खुशी ही खुशी है। पहले हम मनमनाभव कहते थे, मध्याजीभव शब्द नहीं कहते, लेकिन जिसकी बुद्धि में लक्ष्य, लक्ष्यदाता है वो मध्याजीभव है ही।

न्यारे रहने में अक्ल की बात है। जो डिटैच रहना नहीं जानते वह न्यारे रह नहीं सकते। हरेक का पार्ट है। कमल का फूल देखो, उसकी शोभा अपनी है। सूरजमुखी का फूल देखो उसकी शोभा अपनी है। गुलाब के फूल की शोभा अपनी है। अभी यह थोड़ेही कहेंगे कि कांटा क्यों है! जो कांटे को देखता है, फूल को नहीं देखता, वो कौन है। अच्छाई को पकड़ो, गुलाब के फूल को पकड़ने का भी अक्ल चाहिए। ऐसे नहीं सोचो कि इसमें तो कांटे हैं, अरे तू फूल को तो देख। रोज़ गार्डन में जाकर साक्षी होकर देखो, कोई दो फूल एक जैसे नहीं हो सकते। ऐसे दृष्टिकोण वाला फूलों की खुशबू लेकर सुखदायी बन जाता है। हरेक की वैल्यू को, विशेषता को देखने से सुखदाई बन जाते हैं।

निष्काम सेवाधारी, सच्चा सेवाधारी कभी यह नहीं देखता है कि कोई एप्रीसियेट करता है या नहीं। उसकी निष्काम सेवा देख अन्धों की भी आँख खुल जाती है, बहरों के कान खुल जाते हैं। जो अच्छी बात देखने की है, वो देखते नहीं है। जो न सुनने वाली बात सुनते हैं, सुनने वाली बात नहीं सुनते, चार साल की पुरानी बात याद होगी, पर आज की मुरली की बात नहीं याद रहेगी, ये कैसी बुद्धि है! बाबा जो अच्छी-अच्छी बातें सुनाकर मोहित कर लेता है तो और कोई बात बुद्धि में आती ही नहीं है। प्रभु चरित्र की बातें इतनी ऊंची हैं जो और कोई बातें याद ही नहीं आती है। भगवान मेरा सतगुरु, मेरा स्वामी, इसमें कितनी ताकत है।

बाबा ऐसी दृष्टि देके सुला देता है, ऐसे सोना चाहिए जैसे बच्चा, कोई फिकर की बात ही नहीं। जिसको रात को सोने नहीं आता है, उसका सवेरा कैसा होगा, दिन कैसा होगा? दिनचर्या बताती है कि सवेरा कैसा हुआ है। जो रात को लड़ाई-झगड़ा करके सोता है, उसके स्वप्न में भी लड़ाई होती है। संकल्प में बाबा है, स्वप्न में बाबा है तो दर्पण पावरफुल होगा, जिससे औरों को बाप का साक्षात्कार होगा। ऐसा दर्पण हो, यह दिल बताती है।

हड्डी सेवा करने वाले राजकुमार, राजकुमारी बनेंगे। हड्डी सेवा माना जो किसी के दिल को लगे। सच्ची दिल से, जो बाबा ने दिया है, अन्दर से श्रेष्ठ भावना से औरों को दें। सेवा क्या है? रहस्य इतना भरा हुआ है, योगबल से राजाई ले ली। विकर्म विनाश हो गये। इतनी याद हो जो मेरे सारे विकर्म विनाश हो जायें, जो स्वभाव संस्कार में भी नाम-निशान न रहें। अभी प्रैक्टिकली दिखाई देगा। सच्चे पुरुषार्थ में सफलता कितनी है, यह अपने से पूछो? इसमें ठगी मत करो। दूसरे किसी को बीच में लाना माना बाबा से दूर होना। है अशरीरी बाप, पर हमको भी अशरीरी बनाने के बिगर हमारे साथ मिलता नहीं है, कनेक्शन जुटता नहीं है। जब तक हम अशरीरी नहीं बने हैं तब तक बाबा नहीं मिलता है। अन्दर आत्मा अपने आपको समझे कि लाइट माइट मिल रही है, कनेक्शन से मिलेगी। सिर्फ बाबा कहने से नहीं मिलेगी। सिर्फ रिलेशन से नहीं, कनेक्शन से मिलेगी। रिलेशन है पर कनेक्शन वण्डरफुल है। शिक्षक, स्टूडेण्ट का कनेक्शन रिलेशन से है, उनसे सर्व प्राप्तियाँ हैं। रावण इससे मरेगा, ऐसे नहीं मरेगा। नहीं तो रावण कई प्रकार से पकड़कर बैठता है। जब तक ऐसा योगबल नहीं है, तब तक राजाई पद तो बहुत दूर हो जाता है। सेवा करेंगे, बाबा-बाबा करेंगे, तो सतयुग में जरूर आयेंगे।

अटेन्शन और अभ्यास, जिसका अभ्यास है उसको टेन्शन नहीं होगा, अटेन्शन होगा। अभ्यास वाले को प्राप्ति बहुत है। जो बाबा ने सुनाया है वो मेरे अभ्यास में आया है, उसके अभ्यास के आधार पर प्राप्ति है। हरि के द्वार पर बैठे हैं। हरिद्वार से ऋषिकेश, ऋषिकेश से बद्रीनारायण पहुंच जायेंगे। नर से बदल श्रीनारायण बन जायेंगे। पहले हरि के द्वार पर बैठे हैं। ऐसे भाग्यवान बच्चे, जो सदा ही समझें किसका खाते हैं, किसके बच्चे हैं। जिसके घर बैठे हो उसके गुण तो गाओ। बाकी कोई अभिमान की शक्ल बाबा को अच्छी नहीं लगती है। बाबा पास होकर चला जायेगा, मुस्करायेगा भी नहीं।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"टेन्शन से मुक्त होने के लिए बैलेन्स से चलो, हर कर्म त्रिकालदर्शी होकर करो" (2000)

1) बाबा ने हम बच्चों को प्रवृत्ति में रहते निवृत्त रहने, कर्म करते भी कर्म से अकर्मी बनने की पूरी नॉलेज दी है। जिस नॉलेज के आधार पर प्रवृत्ति में हम बैलेन्स रखकर चलते हैं। प्रवृत्ति को निभाते भी उससे निवृत्त रहने की शक्ति अपने पास जमा हो। निवृत्त रहने के लिए हर कर्म में आने से पहले अपने को डिटैच करो, एक सेकेण्ड अशरीरी बनो फिर कर्म करो तो वह कर्म गलत नहीं हो सकता।

2) देही-अभिमानी बन फिर देह के भान में आकर कार्य व्यवहार शुरू करें तो उस कार्य का न अभिमान होगा, न बोझ होगा। न रांग होगा न डिस्टर्ब होंगे क्योंकि यह नॉलेज है कि मैं आत्मा साक्षी बनकर इन कर्मेन्द्रियों से यह कार्य कराती हूँ। तो साक्षी व दृष्टा बन इन कर्मेन्द्रियों के द्वारा ऐसे कर्म करेंगे जैसे ऊंची स्टेज पर बैठकर एक्टिंग देखते हैं। जो रांग कर्म होता है वह दिखाई पड़ता है। साक्षी हो कर्म करने से बैलेन्स आ जाता। लॉ और लव का बैलेन्स परमार्थ और व्यवहार का बैलेन्स... दोनों का सही-सही बुद्धि में जजमेन्ट रहे। अगर बुद्धि सही जजमेंट नहीं देती है, समय पर राइट टच नहीं होता है, तो रांग कर्म हो जाता फिर बुद्धि पर बोझ होता इसलिए अटेन्शन प्लीज़। अर्थात् स्व की सीट पर अटेन्शन से हरेक बात की रिजल्ट का मालूम पड़ता है।

3) त्रिकालदर्शी होने से जवाब मिलता - नथिंग न्यू। जो हुआ कल्याणकारी हुआ। एकदम भविष्य का फायदा बुद्धि में टच होगा जबकि हम जानते हैं कि स्थापना भी होनी है तो विनाश भी होगा, अनेक प्रकार के सृष्टि के खेल चलेंगे तो खिलाड़ी बनकर खेल देखें या रोयें। टेन्शन माना मन का रोना। खिलाड़ी होकर खेलना माना हंसते-हंसते नाचते रहना। तो हम बाबा के साथ इस सृष्टि रूपी खेल में खिलाड़ी हैं। खिलाड़ी बनकर खेल को देखते तो मजा ही मजा है। हम जो कर्म करते हैं उसके लिए हमें हर प्रकार की नॉलेज हो। नॉलेज इज पॉवर।

4) अपनी स्थिति को ऊंचा रखने के लिए बाबा ने हमें मन्त्र दिया है - मनमनाभव, मध्याजी भव और मामेकम् याद करो। यह मन्त्र ही अजपाजाप है। बाबा से हमें पहला वर्सा मिला है - ज्ञान रत्नों का, दूसरा वर्सा है सर्वशक्तियों का। जब स्वयं आलमाइटी ने हमें शक्तियां दी, अथॉरिटी दी तो स्थिति कमजोर क्यों बनती! सब कारणों का निवारण है शक्तियां। हम शिव शक्ति पाण्डवों के सामने यह माया क्या है! बाबा कहते यह माया है छुई मुई। इसे अंगुली दिखाओ तो मुरझा जायेगी। अगर संकल्प की सृष्टि बनाओ तो बड़ी माया है। संकल्प को शक्तिशाली बनाओ तो माया छुईमुई हो जायेगी। तो माया से बचने का साधन है - अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान का बच्चा समझो, शक्तिशाली रहने से माया की शक्ति छू नहीं सकती।

5) बाबा कहते बच्चे, तुम अपने स्वमान में, नशे में रहो। अपनी स्वस्थिति स्वमान पर रखो तो हर प्रकार की माया से ऊपर रहेंगे। माया हमारी परछाई है, उसको पीठ दे दो तो पांव पड़ेगी लेकिन उसका स्वागत करो तो सिर पर चढ़ेगी। हम तो देवता बनने वाली आत्मा हैं, हमारे सिर पर लाइट का क्राउन है, रावण के सिर पर गधे का शीश है। बाबा हमें अपने गोल्ड हस्तों से रोज़ अमृतवेले लाइट माइट से सिर की मालिश कर ताज पहना देता है। हम लाइट माइट का ताज पहने हुए महावीर महावीरनियां हैं।

6) रोज़ अमृतवेले विशेष संकल्प लो कि हमें अन्तर्मुखी रहना है। स्वचिन्तन करना है। कभी बाह्यमुखता में नहीं आओ। किसी दिन संकल्प रखो कि आज कम बोलेंगे, धीरे बोलेंगे, मीठा बोलेंगे। फिर सारे दिन यह प्रैक्टिस करो। किसी दिन संकल्प करो आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गम्भीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शान्ति का दान देना है। कभी संकल्प करो आज हमें सब भक्तों का ईष्ट देव बन उनकी मनोकामना पूरी करनी है।

7) जन्म लेते ही बाबा ने कहा - आओ मेरे विजयी रत्न बच्चे आओ। तो यह विजय का वरदान हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वरदानों का ताज सदा पहनकर रखो। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। फिर देखो कितनी शक्ति आ जाती है। जब खेलने जाते हैं तो कभी यह संकल्प नहीं करते कि खेल में हार होगी। माया अगर शेरनी है तो हम शेर हैं लेकिन माया तो बिल्ली है। हम तो अवतरित हुई आत्मायें हैं। अवतार माना ही पवित्र। हम पवित्र आत्मा थे, हैं और रहेंगे। माया को चैलेन्ज करो तो माया मन्सा में भी तूफान ला नहीं सकती।

8) हम सतयुग के सच्चे कोहिनूर हीरे हैं, आजकल के झूठे पत्थर नहीं हैं। ऐसे अनेक स्वमान हैं जिनकी स्मृति में रहो तो मन्सा शुद्ध हो जायेगी। विजयी माला के ऐसे मोती बनो जो दाना, दाने से मिल जाए। बीच में धागा बिल्कुल दिखाई न दे।

9) हम तपस्वी कुमार हैं, हमें तपस्या करनी है। कल कुछ भी थे राइट थे, रांग थे, बुरे थे उसे आज जीरो लगा दो। जीरो लगाने से हीरो बन जायेंगे। तीन बिन्दु का तिलक लगाओ - मैं आत्मा बिन्दू, बाबा बिन्दू और ड्रामा बिन्दू। यह तीन बिन्दु साथ हैं तो न स्थिति नीचे आयेगी, न डिस्टर्ब होंगे। न अपने को डिस्टर्ब करो न दूसरों को।

10) बाबा ने कहा है तुम छोटे बड़े सब वानप्रस्थी हो। वानप्रस्थी माना सब झंझटो से परे। हम कोई मौनी बाबा नहीं हैं, लेकिन बाहर के वातावरण से परे हैं। जब वानप्रस्थी होकर रहना है तो फालतू बातों में व्यवहारों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। अपने समय को शक्ति को सफल करना है। न टाइम वेस्ट हो, न एनर्जी वेस्ट हो। शुभ भावना, शुभ कामना से हर कर्म करो। पॉजिटिव सोचो। वैर, विरोध, नफरत आदि की बातों में न जाओ।

11) हम हैं उद्धार मूर्त, हमें तो पापियों का, अहिल्याओं का, सबका उद्धार करना है। सदा अपने पॉजिटिव संकल्पों में रहो तो सदा ओ.के.रहेंगे। कोई भी क्वेश्चन नहीं आयेगा। किसी भी बात में न विचलित हो, न करो। योगी का गुण है अचल, अडोल, स्थिर, अखण्ड, निर्विघ्न। इसी लक्ष्य को सामने रखकर लक्षण धारण करो।

12) मुझ योगी को हर परिस्थिति में अपनी स्थिति अचल और अडोल रखनी है, संकल्प में भी मुझे खण्डित मूर्ति नहीं बनना है। फिर देखो कितना चित शान्त और शीतल रहता है। बुद्धि स्थिर रहती है। संस्कार ठण्डे पड़ जाते हैं। ज्ञान से पुराने स्वभाव को खत्म करो। स्व के भाव में रहो।

13) मनुष्य माना ही देह-अभिमानी। हम मनुष्य नहीं हैं। हम देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते अर्थात् स्व के भाव में रहते हैं इसलिए किसी भी आदत के वश नहीं बनो, लेकिन आदतों को वश करो। चिंता को गेट आउट करो। आप मुये मर गई दुनिया। सभी मिट्टी में मिल जाने हैं। तो इन सबको बुद्धि से भूलो, इसी में ही अतीन्द्रिय सुख है। सदा शुभ सोचो, शुभ देखो, शुभ बोलो, शुभ भावना आज नहीं तो कल अपना काम करेगी। अच्छा - ओम् शान्ति।